Crop Weather Watch Group Advisory

U.P. Council of Agricultural Research, Lucknow

मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह (क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप) की सत्ताईसवीं बैठक की संस्तुतियाँ

दिनॉक : 06 दिसम्बर, 2017
समय : 12.00 बजे
स्थान : उपकार सभाकक्ष

मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह, वर्ष 2017–18 की सत्ताईसवीं बैठक डा. आई.एन. मुखर्जी, सहायक महानिदेशक, उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद की अध्यक्षता में दिनांक 06 दिसम्बर, 2017 को उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद के सभाकक्ष में सम्पन्न हुई। बैठक में निदेशक, आंचलिक मौसम विज्ञान केन्द्र अमौसी, च.शे.आजाद कृषि एवं प्रौ. विश्वविद्यालय, कानपुर के मौसम, तिलहन एवं कीट वैज्ञानिक, पशुपालन विभाग, मत्स्य विभाग, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद, उ.प्र. रिमोट सेंसिंग एप्लीकेशन सेंटर एवं परिषद के अधिकारियों/वैज्ञानिकों ने भाग लिया।

भारतीय मौसम विज्ञान विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान एवं उपग्रह से प्राप्त चित्रों के विश्लेषण के अनुसार (दिनांक 06–12 दिसम्बर, 2017 तक) प्रदेश के सभी अंचलों में ओखी चक्रवात अरब सागर में विकसित होकर 65–70 किमी./घण्टे की गति से गुजरात के तटीय क्षेत्रों से टकराने के कारण प्रदेश के उपरी सतह पर चक्रवतीय स्थिति के कारण वातावरण में नमी का प्रतिशत अधिक होने से सप्ताह के प्रारम्भिक 2 दिनों तक (दिनांक 06,07 दिसम्बर) में मध्यम से हल्की बदली छायी रहने के आसार हैं, किन्तु वर्षा की कोई संभावना नहीं है। सप्ताह के शेष दिनों में आसमान साफ रहने के आसार है। प्रदेश के **भावर एवं तराई जलवायुविक क्षेत्र** में स्थित लखीमपुर खीरी, रामपुर, शाहजहॉपुर, बिजनौर, बहराइच, मुजफ्फरनगर, पीलीभीत, बरेली जनपदों के उत्तरी भाग में नमी का प्रतिशत अधिक रहने और न्यूनतम तापक्रम सामान्य अथवा कम रहने की वजह से कहीं कहीं स्थानीय स्तर पर हल्के कोहरे की स्थिति रहने की संभावना है। इस सप्ताह बदली के साथ हल्का कोहरा छाये रहने की वजह से दिन का अधिकतम तापक्रम 21–23 डिग्री सेल्सियस तथा न्यूनतम तापक्रम 12–14 डिग्री सेल्सियस रहने के आसार है जो सामान्य से 1–2 डिग्री सेल्सियस अधिक रहने के आसार है। सप्ताह के प्रारम्भिक दिनों में अधिकांशतया उत्तर पश्चिमी और सप्ताह के अन्तिम दिनों में दक्षिण पूर्वी हवाऐं 2 से 10 किमी./घं. की औसत गति से चलने के आसार है। **पश्चिमी मैदानी जलवायुविक क्षेत्र** के जनपद मेरठ, मुजफ्फरनगर, बागपत, गाजियाबाद, नोएडा, बुलन्दशहर में सप्ताह के दिनांक 7 दिसम्बर तक हल्की बदली रहने के आसार है किन्तु वर्षा की सम्भावना नहीं है। इस सप्ताह इस क्षेत्र का अधिकतम तापक्रम औसत रूप से 22–24 डिग्री से. व न्यूनतम तापक्रम 10–13 डिग्री से. रहने के आसार है जो सामान्य से 1–2 डिग्री सेल्सियस अधिक है। प्रातःकालीन आर्द्रता 75–90 प्रतिशत एवं दोपहर के वक्त 35–55 प्रतिशत रहने के आसार है। **मध्य पश्चिमी मैदानी जलवायुविक क्षेत्र** यथा बिजनौर, ज्योतिबाफूले नगर, मुरादाबाद, बरेली, रामपुर, बदॉयू, पीलीभीत आदि जनपदों में भी बदली की मौजूदगी के बावजूद वर्षा की संभावना नहीं है। इस क्षेत्र में दिन का अधिकतम तापक्रम 22–25 डिग्री से. एवं न्यूनतम तापक्रम 11–13 डिग्री से. रहने के साथ प्रातःकालीन आर्द्रता 75–90 प्रतिशत एवं दोपहर के वक्त 35–45 प्रतिशत रहने की सम्भावना है। **दक्षिणी–पश्चिमी अर्ध–शुष्क** क्षेत्र के जनपदों अलीगढ़, एटा, मथुरा, हाथरस, आगरा, फिरोजाबाद एवं मैनपुरी और **मध्य मैदानी** क्षेत्र के जनपदों यथा शाहजहॉपुर, फर्रूखाबाद, कन्नौज, कौशाम्बी, हरदोई, इटावा, औरैया, कानपुर देहात, उन्नाव, लखनऊ, रायबरेली, सीतापुर एवं लखीमपुर खीरी इत्यादि जनपदों में बदली मौजूद रहेगी किन्तु वर्षा की संभावना नहीं है। सप्ताह के प्रथम 2 दिनों में दिन का तापक्रम औसत से कम तथा अन्तिम दिनों में दिन का अधिकतम तापक्रम सामान्य से अधिक रहने से सप्ताह का औसत तापक्रम (24.5–25.5 डि.से.) के पास और न्यूनतम तापक्रम 09–13 डिग्री के मध्य रहने के आसार है जो सामान्य के आसपास है। वहीं प्रातःकालीन सापेक्षिक आर्द्रता 75–85 प्रतिशत एवं दोपहर के वक्त 35–45 प्रतिशत रहने की सम्भावना है। **बुन्देलखण्ड क्षेत्र** के जनपदों झॉसी, ललितपुर, जालौन, हमीरपुर, महोबा, बॉदा जनपदों में भी बदली के बावजूद वर्षा के आसार नहीं है। इस सप्ताह का अधिकतम तापक्रम 24–27 डिग्री से. एवं न्यूनतम तापक्रम 10–12 डिग्री से. रहने की सम्भावना है। प्रातःकाल सापेक्षिक आर्द्रता 70–85 प्रतिशत एवं दोपहर के वक्त 35–50 प्रतिशत रहने की सम्भावना है। **उत्तरी–पूर्वी मैदानी क्षेत्र** के जनपदों यथा श्रावस्ती, गोंडा, बलरामपुर, बहराइच, बस्ती संतकबीरनगर में इस सप्ताह वर्षा की सम्भावना नहीं है तथा **पूर्वी मैदानी क्षेत्र** के जनपदों यथा बाराबंकी, गाजीपुर, चन्दौली, सुल्तानपुर, आजमगढ़, फैजाबाद, जौनपुर, अम्बेडकरनगर, सन्त रविदास नगर एवं वाराणसी में भी वर्षा की सम्भावना नहीं है। इस सप्ताह का अधिकतम तापमान 24–26 डिग्री से. तथा न्यूनतम तापमान 11–13 डिग्री से. रहने की संभावना है जो सामान्य के पास है। प्रातःकाल सापेक्षिक आर्द्रता 70–85 प्रतिशत एवं दोपहर के वक्त 35–45 प्रतिशत रहने की सम्भावना है। **विंध्यांचल जलवायुविक क्षेत्र** के जनपदों यथा सोनभद्र, मिर्जापुर एवं भदोही में इस सप्ताह बदली के बावजूद वर्षा होने की कोई संभावना नहीं है। उक्त जलवायुवीय क्षेत्रों में दिन का अधिकतम तापक्रम 24–26 डिग्री से. एवं न्यूनतम तापक्रम 12–14 डिग्री से. रहने की सम्भावना है, वहीं इस क्षेत्र की प्रातःकालीन सापेक्षिक आर्द्रता 70–80 प्रतिशत एवं दोपहर

के वक्त 35–40 प्रतिशत रहने की सम्भावना है। इस सप्ताह प्रदेश के लगभग सभी जलवायुविक क्षेत्रों में प्रमुखत्या उत्तर–पश्चिमी और दक्षिण–पूर्वी हवाऐं 02–13 किमी/घण्टे की गति से चलने के आसार हैं, जो सामान्य से 01–08 किमी./घण्टा की औसत गति से अधिक है। इस सप्ताह प्रदेश के अन्तिम दिनों में (11 एवं 12 दिसम्बर) मध्यम से घनी बदली के साथ स्थानीय स्तर पर छुटपुट से हल्की वर्षा प्रदेश के समस्त जनपदों में कहीं कहीं होने के आसार है। खासकर प्रदेश के दक्षिण क्षेत्रों यथा बुन्देलखण्ड में दिनांक 11 एवं 12 दिसम्बर में स्थानीय स्तर पर होने की संभावना है। कुल मिलाकर यह सप्ताह अर्धशुष्क रहेगा।

कृषि विभाग, उ.प्र. से प्राप्त आंकड़ों के अनुसार कुल रबी की बुवाई का लक्ष्य 129.83 लाख हे. के सापेक्ष दिनांक 06 दिसम्बर, 2017 तक प्रदेश में कुल रबी फसलों की बुवाई 82.97 लाख हे. में हुई है जो लक्ष्य का 63.9 प्रतिशत है जबकि गत वर्ष इस अवधि तक बुवाई 86.25 लाख हे. क्षेत्रफल में हुई थी जो लक्ष्य का 66.61 प्रतिशत था। इस वर्ष गेहूँ की बुवाई आच्छादन लक्ष्य 99.15 लाख हे. के सापेक्ष 54.78 लाख हे. में हुई है जो लक्ष्य का 55.26 प्रतिशत है, जबकि गत वर्ष इस अवधि तक 57.08 लाख हे. में गेहूँ की बुवाई हो चुकी थी। दलहनी फसलों में चना की बुवाई का लक्ष्य 5.80 लाख हे. के सापेक्ष प्रतिपूर्ति 5.20 लाख हे. में हुई है जो लक्ष्य का 89.68 प्रतिशत है। मटर की बुवाई 4.48 लाख हे. लक्ष्य के सापेक्ष 3.87 लाख हे. में हुई है जो लक्ष्य का 86.49 प्रतिशत है एवं मसूर के लक्ष्य 6.10 लाख हे. के सापेक्ष पूर्ति 5.66 लाख हे. में हुई है जो लक्ष्य का 92.8 प्रतिशत है। तिलहनी फसलों में तोरिया का लक्ष्य 4.59 लाख हे. के सापेक्ष 4.39 लाख हे. हुई जो लक्ष्य का 95.7 प्रतिशत है जबकि राई–सरसों में 7.45 लाख हे. लक्ष्य के सापेक्ष इस अवधि तक 7.41 लाख हे. में बुवाई हुई जो लक्ष्य का 99.51 प्रतिशत है। रबी मक्का की बुवाई का लक्ष्य 0.2 लाख हे. के सापेक्ष 0.08 लाख हे. में हुई है जो लक्ष्य का 41.46 प्रतिशत है।

प्रदेश में मौसम के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में किसानों को अगले सप्ताह के लिए निम्नलिखित सुझाव दिये जाते हैं:–

- **मौसम के दृष्टिगत सिंचित दशा में गेहूँ की विलम्ब से बुवाई के लिए तापक्रम अनुकूल है अतः बुवाई युद्धस्तर पर करें।**
- **रबी फसलों की बुवाई हेतु प्रमाणित बीज का ही प्रयोग करें। यदि बीज प्रमाणित न हो तो बुवाई से पूर्व बीज जनित रोगों से बचाव के लिये बीज शोधन तथा भूमि जनित रोगों से बचाव के लिये भूमि शोधन करें।**
- **रबी फसलों में उर्वरकों का प्रयोग मृदा परीक्षण के आधार पर ही करें। गेहूँ की बुवाई एवं उर्वरक सही गहराई में डालने तथा कम व्यय में कतार में बुवाई के लिए जीरोटिल फर्टीड्रिल मशीन का प्रयोग करें।**
- **यदि एक ही सिंचाई उपलब्ध हो तो गेहूँ में बुवाई के 20–25 दिन बाद (ताजमूल अवस्था में) हल्की सिंचाई अवश्य करें। विशेष रूप से ऊसर भूमि में पहली सिंचाई हल्की व बुआई के 30 दिन बाद करें।**

गेहूँ की खेती

- हल्की भूमियों में प्रथम सिंचाई के 3–4 दिन बाद ओट आने पर तथा भारी भूमिओं में सिंचाई के पूर्व नत्रजन की शेष मात्रा की आधी मात्रा की टापड्रेसिंग करें।
- गेहूँ की विलम्ब से बुवाई हेतु क्षेत्रीय संस्तुत प्रजातियों यथा एच.आई.1563, डी.बी. डब्लू.–16, के–9423, के–9533, के–9162,डी.बी.डब्लू–14,नरेन्द्र गेहूँ–1076,नरेन्द्र गेहूँ–2036,के–7903, यू.पी.–2425 व पी.वी.डब्लू.–373, एच.डी.–2985, एच. डी.–3059 व ए.ए.आई.डब्लू.–6 की बुआई करें।
- ऊसरीली भूमि हेतु संस्तुत प्रजातियों के.आर.एल.–210, के.आर.एल.–19, के–8434 (प्रसाद), एन.डब्लू.–1067, के. आर.एल. –1–4 व के.आर.एल.–213 की बुवाई करें।
- गेहूँ की बुआई के 20–25 दिन के मध्य पहली सिंचाई के आसपास पौधों में जिंक की कमी के लक्षण प्रकट होते है। लक्षण दिखाई देने पर 5 किग्रा. जिंक सल्फेट तथा 16 किग्रा. यूरिया को 800 लीटर पानी में घोलकर प्रति हे. की दर से छिड़के। जिन क्षेत्रों में यूरिया की टॉपड्रेसिंग हो चुकी हो वहाँ यूरिया के स्थान पर 2.5 किग्रा. बुझे हुये चूने के पानी (2.5 किग्रा. चूने को 10 लीटर पानी में सायंकाल भिगोकर दूसरे दिन पानी निथार कर पानी) का प्रयोग करें।
- गेहूँसा एवं जंगली जई आदि पतली पत्ती वाले खरपतवारों के नियंत्रण के लिये आईसोप्रोट्यूरॉन 75 प्रतिशत डब्लू.पी. 1.25 किग्रा. प्रति हे. अथवा सल्फोसल्फ्यूरॉन 75 प्रतिशत डब्लू.पी. की 33 ग्रा. (2.5 यूनिट)/हे. मात्रा उचित नमी की अवस्था में 500–600 ली. पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- सॅकरी एवं चौड़ी पत्ती दोनों प्रकार के खरपतवारों के एक साथ नियंत्रण हेतु सल्फोसल्फ्यूरान 75 प्रतिशत डब्लू.पी. की 33 ग्रा. (2.5 यूनिट)/हे अथवा सल्फोसल्फ्यूरॉन 75 प्रतिशत, मेट सल्फोसल्फ्यूरॉन मिथाइल 5 प्रतिशत डब्लू.जी. 40 ग्राम (2.50 यूनिट) उचित नमी की अवस्था में 300 ली. प्रति हे. पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें अथवा मैट्रीब्यूजिन 70 प्रतिशत डब्लू.पी. की 250 ग्रा. प्रति हे. 500–600 ली. पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

जौं की खेती

- जौं की विलम्ब से बुवाई हेतु क्षेत्रीय संस्तुत प्रजातियों यथा ज्योति (क.572/10), मंजुला (के.329), आर.एस.–6 तथा डी.एस.–88 (माल्ट हेतु) की बुवाई करें।

तिलहनी फसलों की खेती

- विलम्ब से बोई गई सरसों की फसल में विरलीकरण अवश्य करें तथा बुआई के 35 से 40 दिन बाद आवश्यकतानुसार हल्की सिंचाई करे।
- पौधों के समुचित विकास एवं अधिक शाखाओं हेतु सिंचाई के पूर्व टॉपिंग अवश्य करें।
- माहू,चित्रित बग एवं पत्ती सुरंगक कीट के नियंत्रण हेतु डाईमेथोएट 30 प्रतिशत ई0सी0 अथवा मिथाइल–ओ–डेमेटान 25 प्रतिशत ई0सी0 अथवा क्लोरोपाइरीफास 20 प्रतिशत ई0सी0 की 1.0 ली0 अथवा मोनोक्रोटोफास 36 प्रतिशत एस0एल0 की 500 मिली0/हे0 की दर से लगभग 600–750 ली0 पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिए। एजाडिरेक्टिन (नीम आयल) 0.15 प्रतिशत ई0 सी0, 2.5 ली0/हे0 की दर से भी प्रयोग किया जा सकता है।
- राई–सरसों में अल्टरनेरिया पत्ती धब्बा, सफेद गेरूई एवं तुलासिता रोग के नियंत्रण हेतु मैंकोजेब 75 डब्लू.पी. की 2 किग्रा. अथवा जिनेब 75 प्रतिशत डब्लू.पी. की 2 किग्रा. अथवा जिरम 80 प्रतिशत डब्लू.पी. की 2 किग्रा. अथवा कॉपर आक्सीक्लाराईड 50 प्रतिशत डब्लू.पी. की 3 किग्रा. मात्रा प्रति हे. लगभग 600–750 ली. पानी में घोलकर छिड़काव करें।

दलहनी फसलों की खेती

- चना, मटर और मसूर की समय से बोई गई फसलों से खरपतवार निकाई–गुड़ाई द्वारा नियंत्रित करते रहें।
- मटर की फसल में पत्तियों, फलियों और तनों पर सफेद चूर्ण की तरह फैले बुकनी रोग (पाउडरी मिल्डयू) की रोकथाम के लिये घुलनथील गंधक 80 प्रतिशत 2 कि0 ग्रा0 अथवा ट्राईडेमार्फ 80 प्रतिशत ई0सी0 500 मिली0/हे0 लगभग 500–600 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- दलहनी फसलों विशेषकर चने की फसल में यदि चने की सूंड़ी का प्रारम्भिक प्रकोप के दृष्टिगत अथवा निरीक्षण हेतु गंधपाश (फेरोमोन ट्रेप) का प्रयोग करें।
- राई/सरसों की फसल में बदली युक्त मौसम में माहूँ के प्रकोप की संभावना बढ़ जाती है अतः खेतो की निगरानी करते रहे यदि आर्थिक क्षति स्तर की सीमा तक (20–25 माहूँ/15 सेमी. उपरी शाखा) पहुंचने पर मेथाइल–ओ–डिमेटान अथवा डाईमिथोएट 1 मिली./ली. पानी की दर से छिड़काव करें।

गन्ना की खेती

- अक्टूबर में बोई गई अन्तः फसलों (गन्ने के साथ बोई गई) में आवश्यकतानुसार सिंचाई के बाद उर्वरक का प्रयोग करें।
- गन्ने की पेड़ी में अच्छा फुटाव प्राप्त करने के लिये सिंचाई के उपरान्त ओट आने पर 10 टन/हे. प्रेसमड खाद डालकर गुड़ाई करें इनसे फुटाव अच्छा होगा।
- गन्ने की कटाई जमीन के बराबर से करें, जिससे ठूठ शेष न रहे।
- गन्ने की कटाई के लिए पहले पेड़ी की फसल उसके बाद शरदकालीन तथा सबसे बाद में बसन्तकालीन गन्ने की कटाई करें।

सब्जियों की खेती

- आलू में आवश्यकतानुसार सिंचाई करें तथा झुलसा एंव माहू के नियंत्रण हेतु क्रमशः मैंकोजेब (2 ग्रा0/ली0 पानी) तथा इमिडाक्लोप्रिड 250 मिली./हे. 600 ली. पानी में घोल बनाकर आवश्यकतानुसार छिड़काव करें।
- टमाटर के पौधों में सहारा लगाये।
- टमाटर तथा मिर्च में झुलसा रोग से बचाव हेतु मैंकोजेब 0.2 प्रतिशत (2 ग्रा./ली. पानी) का छिड़काव करें।
- प्याज के बीज की नर्सरी में यदि पिछले माह बुआई न हो सकी हो तो इस माह में अवश्य कर लें। आर्द्रगलन रोग से बचाव हेतु कार्बेन्डाजिम 0.1 प्रतिशत का छिड़काव करें तथा ठंड एवं पाले से बचाव हेतु लो–टनल में पौध उगायें।
- लहसुन में 200 किग्रा0 कैल्शियम अमोनियम नाइट्रेट (किसान खाद) या 100 किग्रा0 यूरिया/हे0 की दर से टॉप ड्रेसिंग करें। ध्यान रहे कि यूरिया का प्रयोग सिंचाई के बाद करें जबकि कैल्शियम अमोनियम नाइट्रेट का प्रयोग करने के बाद सिंचाई करें।
- सब्जियों के खेतों में विशेषतया टमाटर, मिर्च में विषाणु रोग का प्रकोप अधिक हो रहा है। इसका फैलाव सफेद मक्खी/हापर आदि के द्वारा होता है। इसके फैलाव की रोकथाम हेतु डाईमिथोएट अथवा मिथाईल–ओ–डिमेटान 1 मिली./ली. का छिड़काव करें।

बागवानी

- नवीन रोपित बागों की आवश्यकतानुसार सिंचाई करें।
- आम के बागों की गहरी जुताई करें ताकि मिज कीट, फल मक्खी, गुजिया कीट एवं जाला कीट की वे अवस्थायें जो भूमि में दूसरे वर्ष आने तक पड़ी रहती है, नष्ट हो जाये।
- आम में गुजिया कीट के पौधों पर चढ़ने से रोकने के लिए दिसम्बर माह के अंतिम सप्ताह में भूमि से लगभग 40 सेमी ऊपर पेड़ के तने के चारों तरफ मिट्टी की पतली परत चढ़ाकर 400 गेज की मोटी सफेद पालीथीन की 25 सेमी चौड़ी पट्टी लपेट कर

सुतली से बांध दें। यदि गुजिया कीट की संख्या अधिक हो तो प्रत्येक पेड़ में क्लोरपाइरीफॉस (1.5 प्रतिशत) 250 ग्रा0 की दर से तने के चारों ओर गुड़ाई करके मिट्टी में मिलाने से गुजिया कीट का नियंत्रण किया जा सकता है।

- आम में छाल खाने वाले कीटों तथा तना बेधक कीटों के नियंत्रण हेतु छिद्रों को साफ करके 0.05 प्रतिशत डाईक्लोरोवास का घोल छिद्रों में भरकर बंद कर दें।
- गुम्मा बौर की रोकथाम के लिए नई बौर कलिकाओं को तोड़ दें।
- केला की अवांछित पुत्तियों की कटाई तथा आवश्यकतानुसार सिंचाई करें।

पशुपालन

- खुरपका–मुंहपका का टीका जिन पशुपालकों ने अपने पशओं को नहीं लगवाया वो यथाशीघ्र लगवा लें।
- वर्तमान मौसम को देखते हुए पशुओं को ठंड से बचाने के लिए सुबह–शाम पशुओं पर झूल डालें तथा रात में पशुओं को अन्दर पशुघर में बॉधें।
- छोटे बछड़े एवं बछियों का विशेष ध्यान रखकर ठंड से बचायें।
- बोई गयी चारा फसलों में सिंचाई करते रहें ताकि ठंडे मौमस में फसलों की बढ़बार प्रभावित न हो पाये।

मत्स्य पालन

- पानी का तापक्रम 20 डिग्री से. से कम होने की दशा में मछलियों को आवश्यकतानुसार पूरक आहार दें। तालाब में गोबर की खाद एवं रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग भी बंद कर दें।
- यदि एपीजोटिक अल्सरेटिव सिण्ड्रोम से रोग ग्रस्त मछली जाल में आती है और रोग की प्रारम्भिक अवस्था में है तो 1 कि.ग्रा. पोटेशियम परमैग्नेट प्रति हे. जलक्षेत्र की दर से घोल बनाकर तालाब में छिड़काव करें तथा 15 दिन के पश्चात 250 कि.ग्रा. बुझा हुआ चूना का घोल बनाकर तालाब में छिड़काव करें। पोटेशियम परमैग्नेट एवं चूना को 1 महीने के अन्तराल के बाद 3 बार घोल बनाकर तालाब में छिड़काव करें, अथवा रोगग्रस्त तालाब में मत्स्य रोग की रोकथाम हेतु 1 लीटर/हे. की दर से सीफैक्स का घोल बनाकर तालाब में छिड़काव करें।
- जिन तालाबों में मछलियों को रोग नहीं लगा है उनमें भी 250 कि.ग्रा. प्रति हे. की दर से बुझे हुए चूने का घोल बनाकर छिड़काव करें।
- तालाब में मछलियों की वृद्धि की जॉच करते रहे तथा उन्हे शरीर भार का 1 प्रतिशत पूरक आहार दें।
- आक्सीजन की कमी की पूर्ति हेतु 20 प्रतिशत ताजा पानी तालाब में मिलायें व पानी की सफाई करते रहें।
- तालाब में प्राकृतिक भोजन की जॉच कर लें तथा ग्रास कार्प मछलियों के लिए जलीय वनस्पतियों यथा लेमना, हाइड्रिला, नाजाज आदि डालें।

वानिकी

- वृक्षारोपित क्षेत्रों की आवश्यकतानुसार निराई–गुड़ाई व सिंचाई करते रहें।
- यूकेलिप्टस के अंकुरित पौधों को छायाघर में रख लें नहीं तो कोहरे से नुकसान होगा।
- वृक्षारोपड़ हेतु क्षेत्रों का चयन कर लें।

अन्य बिन्दु

- मौसम आधारित कृषि परामर्श समूह की बैठकों के सतत आयोजन के संदर्भ में अवगत कराया गया कि प्रश्नगत परियोजना में वर्तमान में धनराशि अवमुक्त न हो पाने के कारण इस समूह की बैठकों के आयोजन में बाधा उत्पन्न हो रही है। जिस पर समूह के समस्त सदस्यों ने सम्यक विचार–विमर्श उपरान्त यह निर्णय लिया कि मौसम आधारित संस्तुतियां कृषकों के लिए अत्यन्त लाभप्रद है अतः बैठकों का आयोजन ऐन–केन प्रकारेण पूर्व निर्धारित तिथियों में निरन्तर किया जाय तथा कृषि उत्पादन आयुक्त महोदय से इस परियोजना के क्रियान्वयन हेतु अतिशीघ्र बजट अवमुक्त कराये जाने का प्रस्ताव प्रेषित किया जाय ताकि किसानों को ससमय मौसम आधारित कृषि तकनीक संबंधी संस्तुतियां उपलब्ध होती रहे।

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की अगली बैठक दिनॉक 20 दिसम्बर, 2017 को प्रातः 12:00 बजे आयोजित की जायेगी।

नोटः

- क्राप वेदर वाच ग्रुप की बैठकों की संस्तुतियॉ वेबसाईट **www.upcaronline.org** पर भी उपलब्ध है।
- मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह की संस्तुतियॉ इफ्को किसान संचार लिमिटेड के माध्यम से 11 लाख कृषकों को वॉयस एस.एम.एस. द्वारा प्रेषित की जा रही हैं।
- समूह की संस्तुतियों को ईटीवी, उ.प्र. के अन्नदाता कार्यक्रम में प्रसारित किया जा रहा है।

Crop Weather Watch Group Advisory

U.P. Council of Agricultural Research, Lucknow